गरीबदास

नागार्जुन

गरीबदास

नागार्जुन

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन का 'लोगो'
विख्यात चित्रकार मक़बूल फ़िदा हुसेन की
कूची से

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश को फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए।

ISBN : 978-93-5000-485-2

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 1998
द्वितीय संस्करण : 2006
आवृत्ति : 2010
© लेखकाधीन
आर.टेक ऑफसेट, दिल्ली-110095
द्वारा मुद्रित

मूल्य : 95.00

GARIBDAAS (Novel)
by Nagarjun

गरीबदास

नागार्जुन का नव्यतम उपन्यास

अंतर्राष्ट्रीय बाल-दिवस... 1979... बच्चों-बच्चियों का मेला, निवेदिता विद्यालय, हरिनगर...

स्कूल के फैले कंपाउंड की सीमा के पास, बाहर, लाल रंग के कपड़े पर नीली पट्टियों की सिलावट में समारोह के शीर्षक दो बांसों के सहारे झूल रहे थे. अंदर जानेवाले धूल-भरे मार्ग पर जीपों और कारों के टायर के निशान थे. आम के हरे-हरे पत्तों और पीले कनेर की इकहरी मालाओं से प्रवेश-पथ के उन बांसों को सजा दिया गया था. विद्यालय के भवन अंदर काफी दूर थे, लेकिन उन्हें साफ-साफ देखा जा सकता था. रास्ते के इधर-उधर केलों की हरी-भरी बागवानी आंखों को तरावट पहुंचा रही थी. अगल-बगल की क्यारियां करीने से सजी हुई लगती थीं. उनको मेड़ों पर कतारों में केलों के छायादार थंभ ज्ञान से लहरा रहे थे.

विद्यालय की सीध में कुछ और आगे बढ़े तो सामने से इधर आता हुआ एक बालक नजर आया. करीब आकर वह बोला, "आप अखबारवाले हैं न?"

"नहीं," एक ने कहा, "हम कपिल जी के साथी हैं. उत्सव देखने आये हैं."

"नमस्ते!" बालक बोला, "चलिए, एक शिक्षाधिकारी का भाषण चल रहा है... आप आइए, आप दोनों के लिए बैठने की व्यवस्था अंदर है..."

फिर, एक मिनट बाद उसने कहा, "दूर से चलकर आये हैं न! पहले हमारे छात्रावास में चलकर हाथ-मुंह धो लेना चाहेंगे?"

दोनों ने देखा, बालक के पहनावे में नीले रंग का निकर और चंदन वर्णी कमीज थी. सिर पर टोपी-ओपी नहीं थीं. "जरूर ही, वह इस विद्यालय का छात्र है." एक ने दूसरे के कान में कहा.

दोनों आगंतुकों ने उससे कहा, "हम थके-वके नहीं हैं, हमें सीधे वहीं ले चलो..."

समारोह की जगह तक ले जाकर उसने उन दोनों को किनारेवाली कुर्सियों की तरफ आगे बढ़ा दिया. बिना बांहोंवाली, सादी कुर्सियां थीं, लकड़ी की.

दोनों ने उड़ती निगाहों से अंदाज लिया. उपस्थिति ढाई-तीन सौ से अधिक की नहीं थी. छात्र-छात्राओं के अलावा, अध्यापक-अध्यापिकाएं और अभिभावक-अभिभाविकाएं थे. विद्यालय के कर्मचारी, बागवानी के मजदूर और छात्रावास के परिचारक भी जरूर रहे होंगे.

अधेड़ उम्र के शिक्षाधिकारी महोदय पुराने युगों की गुरुकुलीय व्यवस्था का रंगीन ब्यौरा दे रहे थे... कैसे संदीपन मुनि के आश्रम में सुदामा और कृष्ण साथ-साथ पढ़ाई-लिखाई करते थे, कैसे श्रीमंत एवं मामूली हैसियतवाले परिवारों के बच्चे साथ-साथ

गरीबदास : 9

रहकर क्यों सुयोग्य नागरिक बनने का संस्कार हासिल करते. आगे चलकर गुरुकुल में रहे हुए इन्हीं बालकों में से राजा भी निकलते थे, व्यापारी भी और खेतिहर भी, श्रमिक भी और विद्यावान भी, और बुद्धिजीवी भी...आपस में उनके अंदर कटुता की भावना नाम मात्र को भी पनप नहीं पाती थी...

उनके बाद एक और विद्वान वक्ता उठे. उनकी आयु साठ से अधिक की रही होगी. उत्साह में लेकिन तीस वर्ष के नौजवान मालूम पड़ते थे. उन्होंने पुराने युगों की बात नहीं की, भावी भारत का समाजवादी ढांचा कैसा अनोखा होगा और तब हमारी नयी पीढ़ियां शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति की दृष्टि से कितनी उन्नतशील उपलब्धियां हासिल करेंगी, इस पर वे लगभग पंद्रह मिनट विभोर होकर बोलते रहे...

इस समारोह में सबसे ज्यादा आकर्षण की बात क्या थी?

निवेदिता विद्यालय के ये छात्र-छात्राएं उन्हें कभी नहीं भूलेंगें. यह मंच के सामने अपने युनिफार्म में बैठे हुए थे. इनकी दस कतारें थीं. एक-एक कतार में व्यवस्थित तौर पर पंद्रह-पंद्रह छात्र-छात्राएं थे. छात्राओं की संख्या 23 थी, बाकी सभी छात्र थे. उनकी पंक्तियां बराबर के फासले पर थीं सबके साथ पालथी मारे बैठे थे, सावधान और जागरूक मुद्रा में. विद्यालय

के छात्र-छात्राओं का यह अनुशासन बार-बार दोनों आगंतुकों का ध्यान उनकी ओर खींचता रहा. समारोह में मंत्री या राज्यमंत्री स्तर का कोई नेता आमंत्रित रहा होता तो फोटोवालों की भी गुंजाइश जरूर रही होती. काश, इन स्वस्थ, सुंदर, प्रसन्न, छात्र-छात्राओं के चेहरे कैमरे की छवि छाया में उतरकर दूर-दूर तक लोगों की नजरों के लिए सुलभ होते!

माइक का इंतजाम नहीं था, फिर भी बतला दिया गया था कि "छात्रावास के एक रूम में चित्रों की प्रदर्शनी अवश्य देखिए. विद्यालय के बच्चों ने बड़ी मेहनत से प्रदर्शनी का सामान जुटाया है. अंतर्राष्ट्रीय बालवर्ष के सिलसिले में बच्चों की हजारों हजार छाया-छवियां जहां-तहां पत्र-पत्रिकाओं में आ रही हैं, दसवीं, ग्यारहवीं जमात के हमारे छात्रों ने इन चित्रों को जहां-तहां से जुटाया है. आपसे अनुरोध है, चित्रों की यह प्रदर्शनी जरूर देख लें..."

अध्यापकों ने बार-बार बतलाया तो उन दोनों की दिलचस्पी कई गुना बढ़ गयी.

छात्रावास की ओर बढ़ने पर गेंदा और गुलदाउदी के खिले हुए फूलों वाले सौ-सौ पौधों ने कतारों में हमारी अगवानी की. यह देखकर उनकी तबीयत को राहत-सी महसूस हुई कि विद्यालय प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति दकियानूसी दृष्टि नहीं रखता. दो-तीन बालक

Garibdaas

Publisher : Vani Prakashan

Author : Nagarjun

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/9283

Get this eBook